मिशन शिक्षण संवाद

दिवस विशेष कविता संग्रह

जनवरी

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू० पी०

नव वर्ष अभिनंदन

नव किसलय, नव उत्साह भरे,
नवल वर्ष, नव स्फूर्ति चाहा भरें।
पुलकित, हर्षित, ये मन अलबेला,
मंगल कामनाओं सहित उच्छवास भरें ।

सुख-समृद्धि विराजे, घर-आँगन,
रोग-शोक प्रभु, सबके आह करें।
शब्द सजीले हो, सफल मनोरथ हो,
मधुर रागिनी, नव संकल्प की राह धरें।

नव सौरभ, नव ऊषा व्योम मुस्काई,
सतरंगी आशा किरण, अम्बर बांह भरें।
समय अभीष्ट में, सृजित हो सफल आयाम,
कर्मठता संग ज्ञान सब, चित्त नव भाव भरे।

नवल रीत कर, अवगुण सब अपने तजना,
नवल सुरभित प्रेम गीत, जीवन निर्वाह करें।
नवल वर्ष में, सुख-शान्ति समृद्धि विराजे,
कर जोड़ 'ग़ज़ल' प्रभु, अब यही चाह करें।

रचना- वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

भारत रत्न पुरस्कार दिवस

02

2 जनवरी सन 1954 का दिन था खास,
भारत रत्न पुरस्कार का हुआ शुरुआत ।

कला, साहित्य, खेल और विज्ञान क्षेत्र में
सार्वजनिक रूप से, शामिल हुआ ये बात।

प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद द्वारा,
पहली बार मिला यह पुरस्कार ।

वर्ष वर्ष में, 3 लोगों के नाम,
भारत रत्न मिला था पुरस्कार ।

आजादी के दीवानों को भी,
मिलाभारत रत्न' का सम्मान।

खेल क्षेत्र में, क्रिकेटर सचिन को,
पहली बार मिला यह सम्मान।

पुरस्कार सूची में 48 लोगों को,
वर्तमान में शामिल किया गया।

भारत की गौरव को सहेजा संजोंया जिसने,
'भारत रत्न' से उन्हें, पुरस्कृत किया गया।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

सावित्रीबाई फुले जन्मदिन

03

भारत की थी वह, पहली महिला शिक्षिका,
मराठा कवित्री, और थी समाज सुधारिका।
नारी शिक्षा की बनी, प्रथम वह अग्रदूत,
सावित्री बाई फुले, था नाम जिनका।।

3 जनवरी 1831 को, उन्होंने था जन्म लिया,
पिता खन्दोजी, माता लक्ष्मी बाई ने नाम दिया।
9 वर्ष की उम्र में,सावित्रि बाई का विवाह हुआ,
बालिका शिक्षा का, उनके मन में परवाह हुआ।।

पति संग मिलकर, नारी मुक्ति का कार्य किया,
महिला और दलितों के, शिक्षा का प्रयास किया।
विधवा विवाह कराना, और छुआ-छूत मिटाना,
जाने कितने असंभव से, उन्होंने काम किया।।

सामाजिक कुरीतियों को, झेलकर भी,
जन जागरूकता, समाज में वह लायी।
एक वर्ष में, पाँच विद्यालय खोल कर,
पति संग, शिक्षा की अलख जगायी ।।

सन् 1897 में, भयंकर प्लेग था फैला,
मरीजों की सेवा करते, खुद ग्रसित हुई।
10 मार्च 1897 को, उनहोंने देह त्याग,
भारतीय इतिहास में वह लिखित हुई।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी

लुई ब्रेल जन्मदिन

04

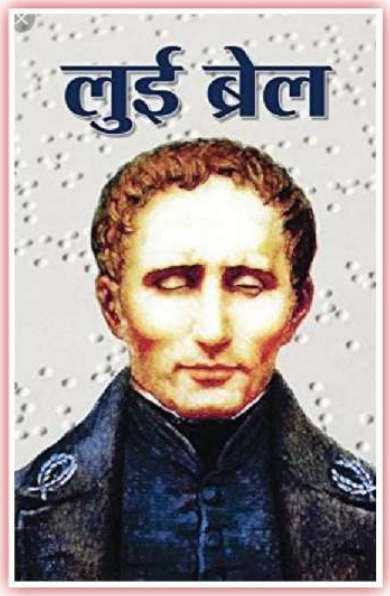

लुई ब्रेल था, नाम जिसका अलबेला,
अन्ध जीवन का, कष्ट था जिसने झेला।
4 जनवरी 1809 फ्रांस में थे वह जन्मे,
3 वर्ष में खोया, रंगीन दुनिया का मेला।

पिता करते थे, घोड़े की काठी बनाने का काम,
पिता संग बालक रहता, अनहोनी से अंजान।
खेलते-खेलते लगा, औजार आँख में जाकर,
दृष्टि चली गई, आँखों में छाया गहन अंधकार।

ज्ञान पिपासु बालक ने, खोया ना आत्मविश्वास,
वैलेंटाइन पादरी के शिष्य बने, जगा मन में आस।
'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर द ब्लाइंड' में शिक्षा पायी,
पादरी को चार्ज बर्बर से, मिलने की इच्छा जतायी।।

चार्ज बर्बर ने, टटोल कर पढ़ने की कूटनीति बनाई,
लुई के मन में इस बात ने, थी नई उम्मीद जगायी।
कुछ संशोधन कर बनाया, उन्होंने नई 'ब्रेल लिपि;
छः बिंदुओं पर, उन्होंने शिक्षा की नींव भी रखी।।

नेत्रहीनों को प्रशिक्षण देकर, मान्यता को प्रार्थना की,
मिली ना सफलता लुई को, कार्य की न सराहना की।
सैन्य कूटनीतिक भाषा ही समझे, तत्कालीन शिक्षाविद,
मृत्यु पश्चात नेत्रहीनों में, ब्रेल लिपि हुआ बहुत लोकप्रिय।।

सर्वाधिकार सुरक्षित

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

विश्व पंछी दिवस

05

कलरव करते पंछी सारे,
नील गगन में उड़ते सहारे ।
दाना चुगते, वो नीड़ मनाते,
श्रम साधक है, हमें बताते।।

क्या खोया, क्या पाया उसने,
स्वप्न सुनारी रोज सजाते ।
हार-जीत की परवाह नहीं,
हौसले संग ऊँची उड़ान है भरते।।

लक्ष्य क्षितिज टटोलती उनकी,
हर आँधी तूफान से वो लड़ते।
नदी,पहाड़, कानन, या उपवन,
पंख पसारे, उड़ते नीलगगन ।।

ना रखते दौलत-शोहरत की लालच,
ना नफरत की झलक कहीं दिखाते ।
रंग, रूप, पंख, बोली पर गर्व नहीं,
मीठी-वाणी, वोसबको सुनाते ।।

स्वच्छंद खग, नभ मे घुमते रहते,
ईष्या की सीमाओं में नहीं रहते।
नदी, जलधि नीर से, प्यास बुझाते,
ऊँच-नीच की भाव, कभी न दिखाते।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

युद्ध अनाथों का विश्व दिवस

06

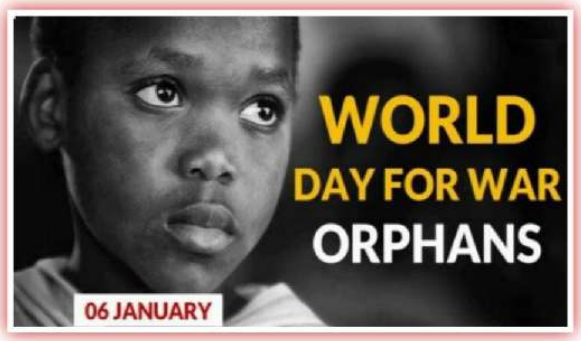

हर बचपन को, जीने दो,
ना हो कोई बच्चा अनाथ।
सर पर हो हाथ बड़ों का,
छूटे ना अपनों का साथ।।

बचपन है जीवन का, स्वर्णिम काल,
भय, तनाव, चिंता से, मुक्त हो हर हाल।
लेकिन कुछ पड़ती है, युद्धों की मार,
अपनों के खोने का दर्द मिलता अपार।।

विनाशकारी युद्धों को, रोके यह संसार,
अनाथालयों में बच्चें, सिसकते बारम्बार।
युद्ध के दुष्परिणामों से, उन्हें मिलते,
बदत्तर भविष्य और सिर्फ अंधकार।।

अनेक कष्टों को, सहते निर्दोष बालक,
युद्ध पीड़ितों को, मिलते नहीं पालक।
सामाजिक-भावनात्मक आघात है मिलता
कौन जिम्मेदार? सुधारे उनकी हालत।।

एक फ्रांसीसी संगठन ने, संकल्प उठाया,
युद्ध में अनाथ हुए, बच्चों को राह दिखाया।
जन-जागरूकता को, फैलाया समाज में,
6 जनवरी 'युद्ध अनाथों का दिवस' मनाया।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

ओल्ड रॉक डे

07

पुराने अलग आकार-प्रकार की,
होती है कुछ चट्टानें ।
इधर-उधर बिखरी दबी,
पाई जाती हैं चट्टानें।।

अपरदन, ज्वालामुखी विस्फोट और
प्राकृतिक आपदाओं से है बनती हैं चट्टानें।
जीवाश्म, आभूषण, पत्थर कोयला आदि
एक तरह के होते हैं, पुरानी चट्टानें ।।

प्रकृति प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा है चट्टानें
मानव अस्तित्व के पूर्व से ही है चट्टानें।
विभिन्न हथियार, उपकरण गहने बनाये जाते,
बहुउद्देशीय और उपयोगी होते हैं चट्टाने ।।

पुराने चट्टानों के जानकारी हेतु,
'ओल्ड रॉक डे' मनाया जाता है।
रेडियोधर्मी डेटिंग से, रॉक की,
उम्र का पता लगाया जाता है।।

पृथ्वी के अतीत के बारे में,
जीवाश्म चट्टाने हमें बताते हैं।
प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में,
रॉक संग्रह के सर्वोत्तम अवसर पाते।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी

साहित्यकार मोहन राकेश

08

नई कहानी आंदोलन का,
जिनको नायक माना जाता।
उस दौर के महानायक थे आप,
नाम मोहन राकेश जाना जाता।।

हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न,
स्वतंत्र लेखक और उपन्यासकार।
समाज के संवेदनशील विषयों पर लेखन,
समकालीन सार्थक हुए वे साहित्यकार।।

'आषाढ़ का एक दिन' था,
हिन्दी का पहला आधुनिक नाटक।
'सरिता पत्रिका' का संपादन किया,
बहुमुखी प्रतिभा संपन्न थे लेखक।।

8 जनवरी, सन् 1925 को जन्में,
पंजाब राज्य के अमृतसर स्थान।
पेशे से वकील पिता के पुत्र थे,
साहित्य-संगीत प्रेमी का था सम्मान।।

लाहौर के 'ओरिएंटल कॉलेज' से,
'शास्त्री' की परीक्षा पास किया ।
फिर पंजाब विश्वविद्यालय से,
हिन्दी, अंग्रेजी में M. A.पास किया।।

एक शिक्षक के रूप में अपने,
जिन्दगी का किया था शुरुआत।
साहित्य अभिरूचि के कारण,
लेखन कार्य का किया शुरुआत।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

प्रवासी भारतीय दिवस

09

घर से दूर जो, लोग परदेश गये,
गांव, घर छोड़ा, वो विदेश गये।
जिम्मेदारियों ने, सुख-चैन छीना,
अनकहे एहसासों में संदेश गये।।

माई, बहना, चाचा, बाबा साथ छूटा,
संगी-साथियों संग, अब रहना छूटा।
पद, पैसे की, इस दुनिया में प्यारों,
अपनों से नजदीकी का रिश्ता टूटा।।

बूढ़ी आँखें, सदा तरसती रहती,
कब आएगा बेटा ? माँ है कहती।
कितनों को तो चिता नसीब नहीं,
परदेस बसे, अनाथ लाशें कहती।।

अपनों से फिर उन्हें मिलायेंगे,
परदेसियों को, देश बुलायेंगे ।
देश के खुशबू, रचे-बसे उनमें,
प्रवासी भारतीय दिवस मनायेंगे।।

'आत्मनिर्भर भारत में योगदान' करें
अपने पुरखों का, वो भी संज्ञान करें
नव श्रृजन को, ज्यों पैतृक नींव मिलें
18वें, प्रवासी दिवस पर योगदान करें।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी

विश्व हिन्दी दिवस

हिन्दी को जन-जन तक पहुँचाये,
कुछ ऐसे हम हिंदी दिवस मनाये।
हिन्दी, हिन्द की है गौरव गाथा,
मातृभूमि का, हम मान बढ़ाये।

सरल, सहज अपनेपन की भाषा,
संस्कृत से जन्मी,भारत की भाग्य विधाता।।
एकता के सूत्र में, बाँधे सुर इसके,
वीररस, करूण, वात्सल्य के गीत सुनाये।।

भावों की अभिलाषा, ज्ञान की पिपासा,
सप्त सिन्धु के अमिय, हर विद्यार्थी प्यासा।
देवनागरी लिपि न्यारी, अद्भुत है संस्कार,
श्रेष्ठतम, उन्नत ग्रंथों की माला, अनूठी परिभाषा।।

शिशु, सरल लोरी सा, जब गाताआखर इसका,
मधु की मिठास सुन, मन मधुर ह्रदय हो जाता।
ऋषियों की वाणी, पुराणों की है भाषा,
वसुदेव-कुटुम्बकम् हिन्दी सर्वोच्च बिठाये।।

हिन्दी को अब,जन-जन तक पहुँचाये,
कुछ ऐसे, हम सब हिंदी दिवस मनाये।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर

राहुल द्रविड़ जन्मदिन

11

भारतीय क्रिकेट के जगत के,
चमकते सितारे अनेक।
राहूल द्रविड़ नाम से रोशन,
धुव्र तारे सा है वह एक।।

11 जनवरी 1973 को जन्में,
मध्य प्रदेश, स्थान इंदौर ।
मराठा परिवार के वंशज,
क्रिकेट में चला उनका दौर।।

'दीवार' नाम से प्रसिद्ध,
पिच पर रहते लंबे समय खड़े।
182 से अधिक कैच साथ,
टेस्ट मैचों से नाम लिये अड़े।।

1999 विश्व कप क्रिकेट क्रिकेटर,
2006 में आईसीसी के बने कप्तान।
सन् 2000 में, 'पद्मश्री' सम्मान मिला,
भारतीयों की बसती है उनमें जान।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

स्वामी विवेकानन्द जी

12

शत्-शत् नमन है तुझे, नव जागृति के सुर छन्द,
अज्ञानता के तम हटा, ज्ञानपुंज दिया आनन्द।
12 जनवरी 1863 को, जन्मे थे विवेकानंद,
विश्वनाथ-विश्वेश्वरी देवी के, घर हुये आनन्द।।

पाखण्य, अन्धविश्वास से ऊपर तूने,
प्रबल सत्य को आत्मसात किया ।
उठो, जागो और सपने सच करो,
नवजागरण का युवा आस दिया।।

राष्ट्रवाद का नारा देकर,
मानवता का संचार किया।
हिंदुत्व के प्रखर भावना का,
विश्व पटल पर प्रचार किया।।

गीता, श्लोक और दृष्टांतों से,
उन्होंने जन-जन का मन हर्षाया।
'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा देकर,
युवा शक्ति का था परचम लहराया।।

शिकागो धर्म सम्मेलन में पहुँचे,
भारत के इकलौते थे वह वक्ता।
भारत के स्थान पर 'शून्य' लिखा था,
'शून्य' पर बोले वह बन प्रवक्ता।।

विश्व गुरु का दर्जा मिला फिर,
नतमस्तक उन्होंने सबको कराया।
भाइयों-बहनों का संबोधन करके,
विदेशियों को भी अपना बनाया।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

लोहड़ी पर्व

13

लोहड़ी आयी, लोहड़ी आयी,
सर्दी खत्म होने की हो बधाई।
चारों और खुशियाँ है छाई,
सब ने मिलकर लोहड़ी मनाई।

13 जनवरी का दिन है खास,
सगे-संबंधी आते सब पास।
जात-पात का भेद मिटाकर,
ज्योत संग जगे,सबमें विश्वास।।

लकड़ी की ढेरी बनाकर,
नाचे सब आग लगाकर।
लोहड़ी के सब गीत गाये,
भांगड़ा करते ढोल बजाकर ।।

मूँगफली, रेवड़ी अग्नि में डालें,
रोग,द्वेष, कष्ट करें अग्नि के हवाले।
हर्षोल्लास से, सब त्योहार मनाये,
गुड़ तिल का व्यंजन मिलकर खाये।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

मकर संक्रान्ति

14

पोंगल, पीहु, उत्तरायण या,
कहो तुम इसे लोहड़ी।
सर्द ऋतु में घोले यह,
गुड़ की मिठास संक्रांति।।

धनु राशि से सुर्य देव,
करते मकर राशि में प्रवेश।
चारों ओर सरसों फूलें,
प्रकृति ने पहना हरियाली वेश।।

संक्राति का पर्व भरें दिलों में उमंग,
आसमान पर छाये रंग-बिरंगी पतंग।
तिल के लड्डू, गज़क तुम खाओ,
तिल गुड़ का दान करो संग-संग।।

प्रयागराज के संगम तट पर,
लगता प्राचीन माघ मेला।
स्नान-दान की परम्परा में,
मोक्षदायी है यह संक्राति बेला।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

भारतीय सेना दिवस

15

अदम्य साहस, शौर्य, वीरता से,
सदा निगेहबानी करती है सेना।
दंगे-फसाद, प्राकृतिक उथल-पुथल हो,
हर बार अपनी जान पर खेलती है सेना।।

बाढ़, सूखा, भूकंप या हो लड़ाई
अडिग खड़ी सेना रक्षा करने को आई
शांति व्यवस्था सुनिश्चित हो देश में
भारतीय सेना के प्राथमिकता है भाई

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में हुये,
दंगे-फ़साद, शरणार्थियों के आगमन।
अनेक प्रशासनिक समस्याएँ भी आयी,
नियंत्रण को सेना कमांडर का हुआ गठन।।

स्वतंत्र भारत ने 15 जनवरी 1949 को,
फील्ड मार्शल करिअप्पा को चुना गया।
प्रथम भारतीय सेना प्रमुख बने थे वह,
15 जनवरी को 'सेना दिवस' मनाया जाता।।

प्रतिवर्ष 'सेना दिवस' के उपलक्ष में,
विभिन्न प्रकार के परेड निकाले जाते हैं ।
शक्ति, शौर्य प्रदर्शन कार्यक्रम होते आयोजित,
थल सेनाध्यक्ष को परेड की सलामी दी जाती है।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

गोविंद रानाडे पुण्यतिथि

16

ब्रिटिश काल के भारतीय न्यायाधीश,
लेखक एवं समाज सुधारक वह थे।
इतिहास के पन्नों में जो अमर हुय,
नाम है उनका महादेव गोविंद राना डे।।

Mahadev Govind Ranade

महाराष्ट्र के छोटे से कस्बे,
निफाड़ में उनका जन्म हुआ।
प्रारंभिक शिक्षा एल्फिन्सटोन कालेज से,
विधि स्नातकोत्तर बम्बई विश्वविद्यालय से।।

मित्रों के संग 'प्रार्थना समाज' की,
राना डे ने स्थापना किया।
आस्तिकता के सिद्धांतों को अपनाया।
धार्मिक सुधारों को प्रचारित किया।।

बाल विवाह, विधवा मुडंन, आडम्बरों का,
उन्होंने पुरजोर विरोध किया।
स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह का,
पूर्ण रूप से समर्थन किया।।

नमन है! तुझे ही भारतीय सुधारक,
सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक लेखक।
16 जनवरी 1901 को देह त्याग दिये,
फिर भी अमर रहेंगे वह कयामत तक।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

जावेद अख्तर जन्मदिन

17

एक गीतकार और पटकथा लेखक,
उम्दा शायर, नाम था जावेद अख्तर।
हिन्दी फिल्मों में दिया बेहतरीन गाने,
कहा जाता है उन्हें कलम का जादूगर।।

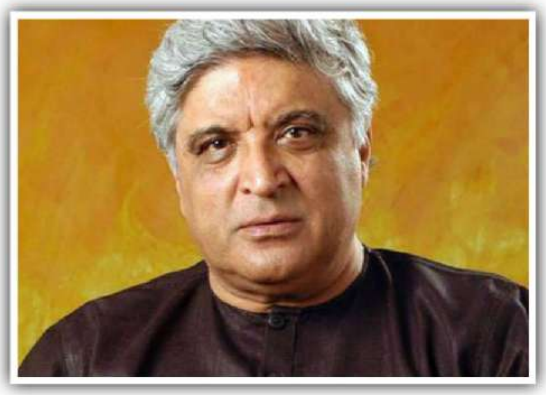

17 जनवरी सन 1945 ग्वालियर में,
जावेद अख्तर जी का जन्म हुआ ।
पिता जां निसार, माता साफिया के पुत्र,
शुरुआती पढ़ाई खाला के घर हुआ।।

लेखन का हुनर विरासत में पाया था,
कविता संगीत का, माहौल घर में पाया था।
माता-पिता उन्हें 'जादू' नाम से बुलाते थे
बाद में उन्होंने ही जावेद नाम दिये थे।।

1964 में काम की तलाश में मुंबई आये,
पटकथा लेखन में फिर अपनी कलम चलाये।
70के दशक में, बहुत से फिल्मी गाने लिखे
शोले, दीवार,डॉन मील के पत्थर साबित हुये।।

काव्य संग्रह है उनके 'तरकश, और लावा'
जावेद ने उनसे पुरस्कार और सम्मान पाया।
गीतों के लिए 8 बार, फिल्म फेयर सम्मान मिला,
सन 2007 में उन्हें, पद्मभूषण से नवाजा गया।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

जे एस वर्मा (मुख्य न्यायाधीश)

18

भारत के 27वें मुख्य न्यायाधीश
और आप थे विधिवेत्ता।
भारतीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष,
आपराधिक कानून समिति के विविधता।।

18 जनवरी 1933 को जन्मे थे,
सतना, मध्य प्रदेश के बरार जिला ।
बेकर हाई स्कूल में शुरुआती शिक्षा हुई
इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा मिला ।।

12 सितम्बर 1972 से, मध्य प्रदेश में,
उच्च न्यायालय के न्यायाधीश नियुक्त हुए।
राष्ट्रीय सुरक्षा निवारक निरोधक कानून के,
सलाहकार समिति के अध्यक्ष नियुक्त हुए।।

1-9-1980 में राजस्थान न्यायालय में,
मुख्य न्यायाधीश आप बनाए गये।
दो बार कार्यवाहक राज्यपाल भी,
राजस्थान राज्य में बनाये गये ।।

सन् 1997 में आप भारत के,
मुख्य न्यायाधीश नियुक्त हुए।
18-1-1998 को न्यायाधीश पद से,
आप सेवा सेवानिवृत्त हुए।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

महाराणा प्रताप पुण्यतिथि

19

अकबर के विजय पताका को,
बीच राह में जिस ने रोका था।
वीर सपूत था वह भारती का,
महाराणा प्रताप योद्धा था।।

स्वाभिमान भी जिस पर गर्वित होता,
गजब का जज्बा था, उस बलिदानी में।
घास की रोटी खाई, गुलामी न स्वीकारी,
जंगल में सेना बनाये, उबले लहू रहे रवानी में।।

चेतक नामक उनका घोड़ा था,
हवा में भरता ऊँचा सदा उड़ान।
शौर्य, पराक्रम, दृढ़ निश्चय था उनमें,
शत्रु विजय कर, बने प्रताप महान ।।

थर-थर कापें नाम से दुश्मन,
हार नहीं था उन्हें कभी स्वीकार।
जब-जब राणा ने भाला उठाया,
दुश्मन ने मानी तब-तबअपनी हार।।

छापामार रणनीति अपनाते,
नाकों चनें दुश्मन से चबवाते।
साथी उनके भाला, तरकस, तीर-कमान
हे ! भारत के लाल तुझे हम शीश नवाते।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

साहित्यकार स्वयं प्रकाश

20

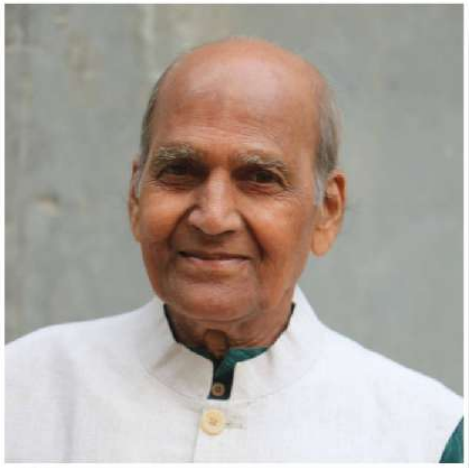

लेखन विद्या के थे महारथी,
आप हिन्दी के महान साहित्यकार।
कई विधाओं में लेखन किया,
साहित्य को दिया नया आकार।।

20 जनवरी सन 1946 को जन्में,
मध्यप्रदेश जन्मस्थली था स्थान।
अद्भुत काव्य कहानी उनकी,
'स्वयं प्रकाश' मिला था नाम।।

मुख्यतः कहानीकार के रूप में,
आप हुये जग में बहुत विख्यात ।
जनवादी लेखन से सम्बद्ध रहें,
साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला सौगात।।

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर आपने,
2004 से भोपाल में निवास किया।
8 दिसम्बर, सन 2019 को,
कर्कट रोग के कारण देहांत हो गया।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

राष्ट्रीय गिलहरी प्रशंसा दिवस

21

गिलहरी होती सुन्दर-सुन्दर,
बच्चों को बड़ा ही भाती है।
शाकाहारी है या जानवर,
पर्यावरण में भूमिका निभाती है।।

कुछ इंच से लेकर कुछ फीट तक,
पूरे विश्व में, यह पायी जाती है।
उत्तर दक्षिण अमेरिका, अफ्रिका का,
मूलतः यह बतायी जाती है।।

एक गिलहरी का वजन,
5-8 किलोग्राम तक होता है।
बड़ी आँखें, धारीदार पूछ और,
पतले शरीर वाली, ये होती है।।

उष्णकटिबंधीय वर्षा वन या हो,
अर्द्धशुष्क रेगिस्तान, में रह लेती है।
शाकाहारी होती है गिलहरी,
बीज और मेरे खा लेती है।।

उत्तरी कैरोलिना के, एशविले के
'क्रिस्टी हाग्रोव' आकाश के निर्माता है।
राष्ट्रीय गिलहरी प्रशंसा दिवस को,
21 जनवरी 2001 से मनाया जाता है।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

जीवन उत्सव दिवस

22

जीवन के हर रिश्ते में,
हम खुशियाँ फैलाते हैं।
अपनेपन और सौहार्द का माहौल हो,
'जीवन का उत्साह दिवस' मनाते हैं।

> प्यार खुद को रिश्तों तक सीमित नही रखता, यह जीवन का उत्सव है।

जीवन के हर उतार-चढ़ाव की,
इस दिन हो, चर्चा परिचर्चा।
आने वाली पीढ़ी का जश्न हो,
ढलते उम्र का, मोह रहे बना।।

जीवन के सभी चरणों में,
भावनाएँ हो प्रत्यक्ष व्यक्त।
सीमित संसाधनों में खुश रहें,
सांसारिक रिश्ते हो सभी सशक्त।।

'रोनाल्ड रेगन' ने 1984 को, अपने
'जीवन उत्सव दिवस' का किया स्थापना।
खुद और बच्चों के जीवन जश्न मनाये,
11 वीं वर्षगाँठ पर, पुनः पूरे विश्व में मना।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

पराक्रम दिवस

23

23 जनवरी सन 1897 का दिन,
खुद ही खुद मे धन्य हुआ था।
उड़ीसा के कायस्थ कुल में जब,
वीर सुभाष का जन्म हुआ था।।

पिता जानकी नाथ, माता प्रभावती की संतान
कुशाग्र बुद्धि थे आप, रोशन किया नाम ।
'रेवेनशा कालेजियोट स्कूल' में दाखिला लिया,
1916 में दर्शनशास्त्र ऑनर्स में बीए पास किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के,
आप थे एक अग्रणी नेता ।
आजाद हिंद फौज का गठन किया,
'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' कहा।।

'जय हिन्द' का नारा देकर,
भारतीयों को था ललकारा।
150 वीं जयंती 2001 में मना,
'पराक्रम दिवस' पर नमन है हमारा।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

राष्ट्रीय बालिका दिवस

24

भारत के बालिकाओं के,
स्वास्थ्य और सुरक्षा का हो काम।
सभी असमानताएँ दूर हो,
अधिकार भी हो बालिकाओं के नाम।।

24 जनवरी 1966 का दिन था खास,
इंदिरा गांधी बने प्रधानमंत्री आज ।
प्रथम नारी शक्ति ने कार्यभार संभाला,
प्रधानमंत्री पद पर शुरू किया काज।।

राष्ट्रीय बालिका दिवस को,
इसी दिन से मनाया गया।
बालिका अधिकारों के प्रति,
जन जागरूकता लाया गया।।

महिला एवं बाल विकास,
भारत सरकार ने शुरूआत किया।
'सेव द गर्ल' थीम पर 2009 से,
बालिका दिवस की शुरुआत हुआ।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

मतदाता दिवस

25

चलो चलो सखी मतदान करें,
सब मिलकर लोकतंत्र निर्माण करें।
निर्भर, निडर,अमन का देश रहे,
स्वच्छ सुशासन का निर्माण करें।।

हर उँगली पर हो वोट का निशान,
मताधिकार करने पर नाज करें।
देश की गरिमा और सम्मान हेतु
जनता से मत करने का आवाहन करें।।

चलो चले सखी मतदान करें,,,,

जाते धर्म सब छोड़ कर
देश हित में सभी महादान करें।
लोकतंत्र के यज्ञ आहुति में,
अपने वोट से हम हवन करें।।

चलो चले सखी मतदान करें,,,

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

गणतंत्र दिवस

26

भारत स्वतंत्र होकर, बना गणतंत्र
ना कोई राजा होगा, आया लोकतंत्र।
26 जनवरी 1950 को संविधान हुआ लागू,
उसी दिन से यह , राष्ट्रीय पर्व हुआ चालू।

इस दिन भारत के राष्ट्रपति द्वारा,
लाल किले पर झण्डा फहराते हैं।
लोकतंत्र स्थापना पर्व पर,
सभी मिलकर जश्न मनाते हैं ।।

दिल्ली में सैन्य परैड-झाँकियाँ,
धूमधाम से निकाली जाती है।
भारतीय संस्कृति की झलक,
इन झाँकियों में उतारी जाती है।।

स्वतन्त्रता संग्राम के शहीदों को,
देश करता है इस दिन नमन।
स्कूल, कॉलेज, कार्यालयों में,
विविध कार्यक्रमों का होता है मंचन।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी

अन्तर्राष्ट्रीय प्रणय दिवस

27

यह दिवस जो प्रलय के,
पीड़ितों की याद दिलाता है।

27 जनवरी को विश्व ऐसे
अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक दिवस मनाता है ।।

1/3 यहूदियों के लाखों लोगों की,
नरसंहार में हत्या हुई थी।

27 जनवरी 1945 को आशविट्ज,
एकाग्रता शिविर से जनता मुक्त हुई थी।।

1 नवम्बर 2005 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने,
60/7 मतो द्वारा प्रस्ताव नामित किया ।

24 जनवरी स्वतन्त्रता के 60 वीं वर्षगाँठ पर,
विशेष सत्र द्वारा प्रस्ताव पारित किया ।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

लाला लाजपत राय जयंती

28

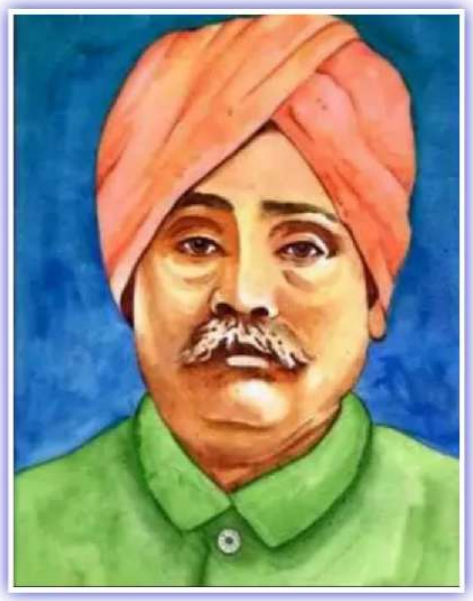

भारतीय इतिहास में,
चमका एक सितारा।
स्वतन्त्रता संग्राम में,
अर्पित किया जीवन सारा।।

28 जनवरी सन 1865 में जन्में,
पंजाब केसरी कर जनता ने पुकारा।
साइमन कमीशन का विरोध किया,
कांग्रेस गरम दल के बने सहारा ।।

लाल, बाल, पाल नाम से थी,
बहुत ही मजबूत तिकड़ी।
स्वतन्त्रता की मांग करने में,
कई बार लगी उन्हें हथकड़ी।।

1928 लाठीचार्ज में वह घायल हुए,
स्वतन्त्रता की मांग को दोहराया।
'ब्रिटिश की लाठी ताबूत की कील बनेगी'
संगी-साथियों को मरते हुए ये समझाया।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

राज्यवर्धन सिंह राठौर

29

29 जनवरी 1970 को जन्में,
कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर।
एक भारतीय राजनेता और,
आप जयपुर पेशेवर शूटर।।

जन्म स्थान है आपका जैसलमेर,
प्रतापनगर, जयपुर, राजस्थान।
निशानेबाजी में करतब दिखाया,
भारत का विश्व में बढ़ाया मान।।

एथेंस ओलंपिक 2004 में,
'रजत पदक' आपने जीता था।
सन 2005 में 'पदमश्री' से,
भारत सरकार ने सम्मानित किया था।।

जयपुर ग्रामीण लोकसभा में,
राठौर जी सांसद में चुने गये।
2017 में संघ राज्य मंत्री पद पर,
सूचना प्रसारण मंत्रालय में चुने गये।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

शहीद दिवस

30

स्वतन्त्रता के मतवाले थे,
बापू हमको बहुत प्यारे थे ।
सत्य अहिंसा से लड़े वो,
आजादी को सब कुछ हारे थे।।

धर्म, राजनीति से परे थे वो,
अंग्रेजी हुकूमत को धिक्कारे थे।
असहयोग, सविनय अवज्ञा अपनाकर,
हर समस्या को, शान्ति से सुधारे थे ।।

'बुरा न सुनो, न कहो, न देखो' बोले,
आत्मबल धैर्य से खुद को सवारे थे।
सादा जीवन उच्च विचार अपनाकर
हिन्दुस्तान के दर्द को, पुत्र बन तारे थे ।।

30 जनवरी 1948 की काली शाम,
संध्याकालीन प्रार्थना का था काम।
गोडसे ने नतमस्तक का किया दिखावा,
गोली मार, किया बाबू का काम तमाम।।

आखिरी शब्द था निकला 'हे राम'
दुनिया में मच गया था कोहराम।
साबरामती संत हुये, चिरनिद्रा में लीन,
'शहीद दिवस' का मिला, दिन को नाम।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

मेजर सोमनाथ शर्मा

31

रण में अदम्य साहस दिखलाया,
प्रथम 'परमवीर चक्र' आपने पाया।
31 जनवरी 1923 को, हिमाचल में जन्में,
इतिहास में स्वर्णिम नाम लिखवाया।।

अमरनाथ शर्मा के थे, आप सुपुत्र,
बचपन से ही सेना का था प्रभाव।
पिता, मामा की शैली थी अनुकरणीय,
शिक्षा से मिला, देशभक्ति का भाव।।

22 फरवरी 1942 ब्रिटिश भारतीय सेना में,
हैदराबाद रेजिडेंट बटालियन में नियुक्त हुए
द्वितीय विश्वयुद्ध में युद्ध कौशल दिखलाया,
रण कौशल का,उनके फिर बहुत चर्चे हुए ।।

कुमाऊँ रेजिडेंट, डेल्टा कंपनी के,
सोमनाथ शर्मा जी थे कंपनी कमांडर।
1947 के भारत-पाक संघर्ष में,
शत्रु के छक्के छुड़ाये, पैदा किये डर।।

शौर्य, पराक्रम और कुर्बानी की,
आप अभूतपूर्व मिसाल, मान रखा।
55 जवानों से, 500 से अधिक मारें,
6 घंटे तक फौज को, खुद रोके रखा।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर, यू०पी०

धन्यवाद आपका